एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2022)
www.agrilrticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गर्मियों के मौसम में बागों में की जाने वाली आवश्यक कर्षण क्रियाएं

(*पुष्पेंद्र सिंह चौधरी एवं के. थम्पासना)
कृषि महाविद्यालय, शेखावाटी संस्थान (श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर से संबद्ध)
* 123swift16@gmlil.com

बसंत मौसम के जाते जाते ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है एवं इस दौरान बागों में किये जाने वाले कृषि कार्यों का फलों एवं फूलों पर प्रभाव पड़ता है। गर्मियों के समय एक तरफ कुछ शीत ऋतु की फसलों में फलों के लगने एवं फल बढ़ोतरी की क्रियाएं ली जाती है। तो दूसरी तरफ शुष्कवर्गीय फलों में कांट छांट अनार एवं अमरुद में बहार नियंत्रण करना खजूर में विरलीकरण की क्रियाएं की जाती है। इस लेख के माध्यम से विभिन्न फलों के बागों गर्मियों में होने वाले क्रियाओं की जानकारी प्रस्तुत की जा रही है जो किसानो के लिए उत्तम जानकारी के लिए उपयुक्त है।

1) **अमरुद**

गर्मियों का महीना मुख्यरूप से शुष्क होता है एवं वातावरण में निरंतर आद्रता की कमी होती जाती हैं | जिसके फलस्वरूप मृदा में पानी की कमी होने लगती है| इसका मुख्य प्रभाव फलों की गुणबत्ता पर पड़ता है| अतः उचित समय पर पौधों में सिंचाई न होने पर फलों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और फल छोटे रह जाते है| किसानो को छोटे फलों से अधिक मुनाफा नहीं ले पाते है अतः 8-10 दिनों के अंतराल से अमरूदों के पौधों में सिंचाई करना आवश्यक है|

अप्रैल माह के अंत में अमरुद के फलों पर फल मक्खी का प्रकोप बढ़ता जाता है| यदि फल मक्खी का प्रकोप अधिक होने पर quinolphos का 2 ml प्रति लीटर या मेलाथियान का 1 ml प्रति लीटर, मोनोक्रोटोफॉस 2 ml प्रति लीटर की दर से छिड़काव करे कीटनाशियों का छिड़काव 3 हफ़्तों के अंतराल पे 3-4 बार किया जाना चाहिए|

गर्मियों के मौसम मुख्य रूप से जून का महीना नए बाग लगाने के लिए उपयुक्त है| अतः इस माह में पौधे लगाने के लिए गड्ढ़ों को 5 X 5 मीटर की दूरी पर खोदना चाहिए| प्रत्येक गड्ढ़ों में 10 कि. ग्रा. सड़ी गोबर की खाद, 1 कि. ग्रा., नीम की खली, 50 ग्राम chlorpyriphos को मृदा में मिलाकर गड्ढ़ों में भर देना चाहिए और सिंचित कर देना चाहिए जिससे गढ्डे की मिट्टी बैठ जाती है| गर्मियों में मुख्यतया जिंक तत्व की पौधों में कमी देखी जाती है जिसकी कमी से पत्तियाँ पीली हो जाती है| पौधों में जिंक की कमी को दूर करने के लिए आधा किलो ग्राम जिंक सलफेट और CaO (बुझा चुना)

का घोल 100 लीटर पानी में बनाकर इसका छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर 2-3 दिनों के अंतराल पर छिड़काव कर देना चाहिए|

2) **बेर**

बेर मुख्य रूप से भारत के उत्तरी भाग में बहुतायत से उगाया जाता है| गर्मियों में जब पौधों में अधिकांश पत्तियाँ झड़ जाती है तो पौधा सुष्तावस्था में आ जाता है| तो यह समय पौधों की कटाई छटाई के लिए उपयुक्त माना जाता है| जो पौधे छोटे होते है उन्हें 1 मीटर की ऊंचाई तक तने पर निकलने बाली शाखों को काट देना चाहिए एवं बड़े पेड़ों से चटकी फटी एवं कीड़ों से प्रभावित शाखाओं को अलग कर देना चाहिए|

कटाई छटाई के दौरान सामान्यतय पिछले बर्ष की शाखाओं को 50 प्रतिशत तक काट देना चाहिए एवं द्वितीय शाखा से 10 -12 कलियों को नष्ट कर देना चाहिए जिससे उत्पन्न होने वाली शाखा मजबूत होती है और अधिक फूलों का विकाश होता है| शाखाओं के कटे स्थान पर रोगों के प्रकोप से बचाव के लिए फफूंदनाशी बिलेटोक्स उपयोग करना चाहिए| यह कार्य मई - जून के माह में बारिश आने से पूर्व संपन्न कर लेना चाहिए|

पेड़ो की छंटाई के बाद एक - दो बार पेड़ो के नीचे बने हुए थालों में जुताई कर देनी चाहिए जिससे मृदा में उपस्थित हानिकारक कीड़े- मकोड़े के अंडे एवं प्यूपा नष्ट हो जाते है| पेड़ों के मुख्य तने के चारों तरफ 60 से मी की दूरी पर घेरा बना कर सिंचाई करना चाहिए| गर्मियों के मौसम में गड्ढे बनाकर छोड़ देना चाहिए और एक बारिश होने के बाद पौधों को गड्ढों में लगा देना चाहिए| एक साल के पौधे में थाले बनाकर 5 kg वर्मीकम्पोस्ट खाद , 50 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम पोस्फेट और 25 ग्राम पोटाश प्रति थाले की दर से प्रयोग करे जब पेड़ 8 साल का हो जाये तो उर्बरक की मात्रा 8 गुणा अधिक प्रयोग करनी चाहिए|

3) **आंवला**

आंवला एक उपोष्णकटिबंधीय जलबायु का पौधा है जिसमे सूखा प्रतिरोधी छमता होती है और कम बारिश में भी आसानी से लगाया जा सकता है| नए आंवले के पौधों को रोपण करने के लिए मई - जून माह में गड्ढे बनाये तथा किस्मो के चुनाव के आधार पर गड्ढों के बीच अंतराल रखे सामन्यतय आंवला में दो गड्ढों के बीच 6x6 मीटर की दूरी राखी जाती है| प्रत्येक गड्ढे में 10 kg सड़ी गोबर की खाद, 1kg नीम की खली और 50 ग्राम क्लोरपैरिफोस मृदा की ऊपरी परत में मिला देनी चाहिए|

आंवला के पौधों में स्वयं - वन्ध्यता पाई जाती है जिसके फलस्वरूप आंवला के बाग़ लगते समय दो या दो से अधिक किस्मों का चुनाव करना चाहिए जिससे दोनों किस्मे एक दूसरे के लिए परागणकर्ता का कार्य करती |

नए पौधे रोपण करने के बाद मृदा में नमी को बनाये रखने के लिए 10 -15 cm मोटाई की पलवार को थालों में लगा देना चाहिए| पलवार के रूप में खेतों में उपलब्ध घांस फूंस, चारे की पलवार बना कर नमी को सरंक्षित कर सकते है| यदि पलवार के रूप में प्लास्टिक पॉलिथीन का उपयोग लेना हो तो 100 माइक्रोन मोटी काले रंग या पारगम्य प्लास्टिक फिल्म का उपयोग किया जा सकता है जो नमी को प्रभावी तरीके से मृदा में बनाये रखती है और खरपतवार को उगने नहीं देती|

4) खजूर

खजूर मुख्यतय राजस्थान के पश्चिमी भाग में उगाया जाता है क्योकि यह पौधा पश्चिमी राजस्थान में पाई जाने वाली विपरीत जलबायु में आसानी से लगाया जा सकता है| खजूर की खेती राजस्थान के पश्चिमी 12 जिलों में की जाती है जिसमे मुख्य रूप से बीकानेर, बाड़नेर, जैसलमेर, जोधपुर में बहुतायत रूप से की जा रही है| खजूर के बाग़ तैयार करने के लिए मई- जून माह में गड्ढे बनाये जाते हैं और प्रत्येक गड्ढों में मृदा की ऊपरी परत में आवश्यकता के अनुसार सड़ी गोबर की खाद, नीम की खली और chlorpyriphos मिला कर भर देना चाहिए|

खजूर के पेड़ों पर अप्रैल माह के बाद फल आना शुरू हो जाता है| इसीलिए फलों में अच्छी गुणबत्ता, एवं अधिक फल उत्पादन के लिए कृषि क्रियाएं की जाती है| खजूर के फल हमेशा गुच्छों के रूप में लगते है और फल सेट होने के बाद गुच्छों के डंठल को नीचे की मोड़ देते हैं| ताकि फल मध्य शिरा से नीचे लटके रहे इससे फलों के बढ़ते बजन के वजह से डंठल के टूटने का खतरा कम हो जाता है| जून के प्रथम सप्ताह में फलों के विरलीकरण का कार्य पूरा कर लेना चाहिए विरलीकरण में डंठल से गुच्छों को अलग कर लेना चाहिए या गुच्छों से फलों को अलग कर देना चाहिए| एक डंठल पर 5 -8 गुच्छों को पकने के लिए छोड़ देते है जिससे फल के गुच्छे जल्दी पकते हैं और गुणबत्ता में भी सुधर होता है|

मई - जून के महीने में ड्रिप की सहायता से बागों में नियमित सिंचाई करनी चाहिए| जब खजूर के फल डोका अवस्था में होते है तो प्लास्टिक या कपडे की परत से ढक देते हैं ताकि बारिश होने पे फलों की गुणबत्ता पर कोई विपरीत असर न हो| पक्षियों से खजूर के फलों में होने बाले नुकसान को रोकने के लिए डंठल को कपडे या जाली से ढक देना चाहिए खजूर की मुख्य किस्में खुणेची, मेड़झूल, मस्कट , हलावी है जो राजस्थान में बहुतायत रूप से उगाई जाती है खजूर के फलों को डोका अवस्था में तुड़ाई की जाती है| जो प्रसंकरण के बाद छुआरा बनाने में प्रयोग में लाया जा सकता है|

5) **अनार**

अनार एक शुष्क फल है | उत्तर भारत के शुष्क भाग जहां अनार की खेती की जाती है, वहां मृग बहार की फसल को लिया जाता है| मृग बहार के लिए अप्रैल - मई के महीने में पौधों की सिंचाई बंद कर देनी चाहिए जिससे पौधों पे लगे हुए फूल झड जाते है| 45 - 50 दिनों बाद पौधों की छंटाई कर देनी चाहिए एवं सिचाई के साथ ही उर्बरकों को पौधों में थाला बिधी से उपयोग करना चाहिए| अनार के एक पौधे को 10 -15 कि. ग्रा. वर्मीकम्पोस्ट, 250 ,125 , 125 ग्राम नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैशियम प्रति पौधा प्रतिबर्ष उपयोग करना चाहिए यह फलन एवं पुष्पन में बढ़ोतरी करता है |

अनार के नए पौधों के बागों के लगाने हेतु मानसून का समय सही माना जाता है| इसके लिए गढ्डों को रेंखांकित कर मई जून माह में गढ्डे बनाये जाते है और पौधा रोपण का कार्य मानसून की पहली बारिश के बाद पूर्ण कर लेना चाहिए| दो गढ्डों के बीच 4 - 5 मीटर दूरी के अंतराल पे गढ्डे बनाये जाते है एवं गढ्डों का आकार 60 cm होना चाहिए | अनार के फलों को फल मक्खी, पक्षियों से होने वाले नुकसान से बचाने हेतु एवं फलों में रंग विकसित करने के लिए फलों को बटर पेपर या कपड़ों से ढक देना चाहिए ताकि अच्छी गुणबत्ता और बड़े आकार का फल तैयार हो सके जिससे किसान अधिक मुनाफा अर्जित कर सके|